प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री कामेरीकर एस्.वाय्. ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध ' भूषणाकृत शिवा-बावनी ' में अभिव्यक्त शिवाजी का चरित्र - एक अनुशीलन ' मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूर्ण परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री कामेरीकर एस्.वाय्. के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

(प्रा.शादर कणबरकर)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

दिनांक 29th May 1989 : : १९८९

••

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ क्र.
	प्राक्कथन	१-३
प्रथम अध्याय	- भूषण का जीवन परिचय	१-२१
द्वितीय अध्याय	भूषण कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ	२२-३३
तृतीय अध्याय	`शिवा-बावनी` में अभिव्यक्त शिवाजी का चरित्र	३४-८७
	- अ - सच्चरित्रता	
	-आ - उदारता	
	- इ - वीरता	
	- ई - लोक-संग्राहकता	
	- उ - राष्ट्रीयता	
	उपसंहार	८८-९३
	संदर्भ ग्रंथ सूची	९४-९५

प्रा क्क थ न

प्राक्कथन

हिंदी वीर-काव्य में महाकवि भूषण का स्थान अद्वितीय है। कवि भूषण का आगमन हिंदी वीरकाव्य में एक नया मोड निर्माण करता है। सौभाग्य से मेरे कॉलेज जीवन में मुझे महाकवि भूषण का परिचय रीतिकालीन कवि के नाते हुआ था। तब से ही मेरे मन में उनके प्रति एक सादर आकर्षण पैदा हो गया था। आज जब मेरे सामने लघुशोध-प्रबन्ध का विषय चुनने का मौका मिला, तो अनायास मेरे सामने भूषण साकार हो उठे। जब मैंने इस विषय का प्रस्ताव श्रध्देय गुरुवर्य प्रा. रणाबरकरजी के सम्मुख रखा तो आपने हामी भर दी, तथा विषय की गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया।

भूषणपूर्व युग में लिखे गये रीतिकालीन काव्य केवल शृंगार से ही भरे हुए थे। उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन था। उस शृंगार काव्य में वीरता न के बराबर थी। रीतिकाल में भूषण ने सबसे पहली बार वीरकाव्य लिखा। उन्होंने अनेक वीर-राजाओं का चित्रण अपने काव्य में करके हिंदी वीर-काव्य की विधा को एक नया मोड दिया। सही अर्थों में महाकवि भूषण रीतिकाव्य के वीरकाव्य सम्राट बन गये।

विषय की निश्चिती के बाद मेरे सम्मुख निम्नोक्त प्रश्न विचारार्थ रहे हैं ---

(१) रीतिकाल जैसे शृंगारी कालखंड में वीरकाव्य का जनक कौन है ?

(२) रीतिकालीन राजनीतिक स्थिति कैसी थी ? क्या हिंदुओं को राजनीतिक संरक्षण था ? क्या उनका जीवन सुखी था ? क्या उनका धर्म सुरक्षित था ?

(३) क्या छ.शिवाजी सच्चरित्रवान थे ?

(४) क्या छ.शिवाजी सचमुच उदार-हृदय थे ?

(५) क्या छ.शिवाजी में वीरता के सभी गुण थे ?

(६) क्या छ.शिवाजी ने मात्र हिंदुओं को सेना में स्थान दिया ?

(७) क्या छ.शिवाजी राष्ट्रीयता की दृष्टिसे संकुचित वृत्ति के थे ?

इन प्रश्नों की सहायता से मैंने कवि भूषणकृत `शिवा-बावनी` में अभिव्यक्त शिवाजी महाराज का चरित्र-चित्रण करने की कोशिश की है।

अत: इस समग्र विवेचन को मैंने निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत किया है --

प्रथम अध्याय -- कवि भूषण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
द्वितीय अध्याय- भूषण कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ - राजनीतिक परिस्थिति का अन्य परिस्थितियों पर प्रभाव।
तृतीय अध्याय :- शिवा-बावनी` में अभिव्यक्त छ.शिवाजी का चरित्र।

यही अध्याय मेरे लघु-शोध प्रबंध का हृदयस्थल है। कवि भूषण ने अनेक वीरों के वीरत्व का चित्रण अपने काव्य में किया है, जिन्होंने हिंदु-धर्म की रक्षा के लिए योगदान दिया है। उसमें सबसे प्रमुख वीर छ.शिवाजी महाराज हैं। `शिवा-बावनी` इस ग्रंथ के नायक छ.शिवाजी महाराज हैं। उनके चरित्र को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से पाँच विभागों के अंतर्गत रखकर विवेचन किया है। ये पाँच विभाग इसप्रकार हैं ---

अ) सच्चरित्रता
आ) उदारता
इ) वीरता
ई) लोकसंग्राहकता
उ) राष्ट्रीयता

इसप्रकार विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में रखे हुए हैं। और अंत में सहायुयक ग्रंथों की सूची भी जोड दी है।

अहिंदी भाषी छात्र होते हुए भी मुझे अपने इस कार्य में श्रध्देय गुरुदेव प्रा.शरद कणाबरकरजी का अध्ययन संपन्न पथप्रदर्शन बहुत बडा सहायक साबित हुआ है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद श्रध्देय प्रा. कणाबरकरजी ने एक सफल

निर्देशक के रूप में मुझे जो मार्गदर्शन किया है उस ऋण से उऋण हो पाना केवल असंभव है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के गुण आपके हैं और त्रुटियाँ मेरी हैं।

मेरी आर्थिक कठिनाइयों के कारण एम्.फिल्. की उपाधि लेना मेरे लिए नामुमकिन था, लेकिन वात्सल्यभरी प्रेरणा देनेवाले श्रध्देय गुरुदेव श्री.व्ही. एस्. कुलकर्णीजी ने मुझे उत्साहित किया। सब लोगों का स्नेहभरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत शोध-कार्यमें सफल हो न पाता। जिन लोगों ने इस संशोधन कार्य में सहायता की है, उनके प्रति मैं हृदयसे आभार व्यक्त करना अपना फर्ज मानता हूँ।

मेरे इस संशोधन कार्य में मुझे निरंतर प्रेरित करनेवाले और अपनी ओर से सक्रिय योगदान देनेवाले मेरे पथप्रदर्शक मित्र प्रा.ए.बी. आटगडे, प्रा.डी.सी. फसाले आदि दोस्तों को मैं धन्यवाद देता हूँ। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय, वाय्.सी.कॉलेज इस्लामपुर के ग्रंथपाल तथा राजाराम बापू पाटील आर्ट्स ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज ,आष्टा के ग्रंथपाल एवं अन्य सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। अंत में टंकलेखक श्री बालकृष्ण आर.सावंत,कोल्हापुर ने टंकलेखन किया उनका मैं आभारी हूँ।

श्रध्देय डॉ.बी.एस्. जाधवजी, प्रा.व्ही.डी.सुर्वेजी ,प्रा.एम्.एस्. हसबनीसजी तथा श्री बी.जी.बिळासकरजी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सफलता देता रहा है। भविष्य में भी इन सब लोगोंसे आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए सुधी समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर -
दिनांक २९।५।१९८९

श्री कामरीकर एस्.वाय.